सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• वंदना शर्मा

सृजक-सृजन-समीक्षा

वंदना शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
वंदना शर्मा का परिचय

नाम + वंदना शर्मा

निवास स्थान :- गुडगाँव

शिक्षा ÷ शास्त्रीय संगीत में एम. ए.

विशेषता ...गायिका , लेखिका , गीतकार संगीतकार

व्यवसाय ÷ सँगीत एकेडमी , भजन गायिका

सौभाग्यवश बचपन से ही मुझे साहित्य और सँगीत का परिवेश मिला... मेरे दादा जी प्रोफेसर रामानन्द जी विष्णु दिगम्बर जी के शिष्य एक विख्यात संगीतकार और गायक थे.... मेरे पिताजी चाचा जी सुप्रसिद्ध भजन गायक शर्माबन्धु के नाम से जाने जाते है...जिनका एक लोकप्रिय भजन "जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को मिल जाए तरुवर की छाया " फ़िल्म परिणय से अपनी पहचान बना कर आज भी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर रहा है ...

बचपन से ही साहित्य , कला और संगीत में रुझान रहने के कारण आठवीं कक्षा से ही घर के मंच से तुलसीदास कृत रामचरितमानस , विनयपत्रिका , का गायन प्रारम्भ कर दिया था अपने अनुज आंजनेय के साथ लगभग 10 वर्षों तक साहित्य कला परिषद के कार्यक्रम दिल्ली और देश के विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत किये ....

गायन के साथ साथ लेखन में भी विशेष रुचि रही .....काव्यकौशल से पूरी तरह अनभिज्ञ हूँ बस अपने भावों को शब्द रूप देने का प्रयास करती हूँ मेरी लिखी हुई कुछ रचनाएँ प्रस्तुत है.....

वंदना शर्मा

"सृजक का सृजन"

धरती की पुकार.....

आह ! सुनी करुणा से भरी
स्तब्ध गगन भी चौंक पड़ा
यह आज धरा क्यूँ विह्वल है
वो सोच तनिक सा और झुका
बोलो देवी क्या बात हुई
क्यों हृदय विदारक पीड़ा है
तुम्हें रुष्ट करके किसने
सृष्टि का अंत समीप किया

अत्यंत दुखित धरती बोली
अब पाप भार असहनीय हुआ
कर कर के टुकड़े लाखो में
छलनी मेरा हर अंग किया
पाला था पुत्र समझ जिसको
उसने मेरा उपहास किया
अपने ही बच्चों के हाथों
मेरे सौंदर्य का नाश हुआ

हे धरती माँ संयम धारो
तेरा हर अश्रु प्रलय होगा
तेरा मन यदि विचलित होगा
कम्पित होंगे भूखण्ड सभी

हे ! स्नेह सुधा धरती माता
अपने स्वरूप को पहचानो
पुत्र कुपुत्र भले ही हो
पर ममता और प्रेम परिपूरित
माता का हृदय विशाल रहा
तुम युगों युगों से धन्य रही
ये नमन मेरा स्वीकार करो

ओ मेरे मन...

जीवन की इस धूप छाव में
मन तेरा अस्तित्व कहाँ
रिश्तों के इस महाजाल में
कैसे तू आसक्त हुआ

अपनों के ही प्रेम पाश में
कैसे कब संलिप्त हुआ
मेरी काया में रहकर ही
मुझसे क्यों अंजान हुआ

कोई नहीं पूरी कर पाया
इच्छाओं की फ़ेरिस्ते
चार प्रहर के इस जीवन में
कुछ क्षण मेरे साथ बिता

गज़ल

(रूहानी अहसास.....)

वक्त बे वक्त ख्यालों में चले आते हो
बिना इजाज़त रूह तक पहुँच जाते हो

किस हक से ये हिमाक़त दिखाते हो
मेरे रूहानी हमसफ़र बन जाते हो

फिर बना कर अपनी रूह ए हयात
क्यूँ मुझे मुझसे ही जुदा कर जाते हो

रहनुमा की मानिंद मुझे हासिल करके
बरबस ही अपनी बंदगी करवा जाते हो

मौत तो हासिल है ज़िन्दगी के लिये
तुम मुझे जीने का सबब दिए जाते हो

गीत (तर्ज-- पांव छू लेने दो)

कोई ख्वाहिश हुई पूरी कि बुलाया उसने
तेरी रहमत बड़ी मौला कि बुलाया उसने

चाँद तारों से सजा दो कोई आँचल मेरा
मेरी चाहत हुई पूरी कि जताया उसने

राह में फूल बिछा दूँ करूँ सजदा उसका
ख्वाब जन्नत का मुझे आज दिखाया उसने

सुर्ख़ आँखों में थमे अश्क रोके ना रुके
बाद मुद्दत के ख़ुशी में भी रुलाया उसने

मेरी खुशियों का सबब बन गया पैगाम तेरा
मेरे ख़्वाबो को हकीकत से मिलाया उसने

गज़ल

खुशनुमा शाम भी जाने वाली है
रात इन्तजार की कितनी काली है

तेरे आने की आहट सुनने को
बोझिल पलकों ने नींद टाली है

दिलासा दे के गया है चाँद अभी
देख आसमाँ में सहर की लाली है

तू लौट कर आएगा एक दिन
इसी आस में साँसे संभाली है

मेरे अपनो से

चलो कर लेती हूँ
परिमार्जित खुद को
अपनी इच्छाओं-
आकांक्षाओं की धूल से
जो मेरे स्वरूप के आइने को
धुंधला कर देती है
मेरे अपनो से..
जब कभी मेरी
आशाओं की नदी
उमगों से भर
वेग पकड़ने लगती है
तो वो बाढ़ के पानी की तरह
भयावह दिखने लगती है..
सिमट जाती हूँ
उनको व्याकुल देख
फिर से एक निर्लिप्त भाव मे
मेरी सारी आशाएं
तृप्त हो जाती है
उनके चहरे पर
शीतलता देख कर..
मेरे मन को भाता है
खुद को इस तरह
परिमार्जित करना
मेरे अपनो के लिए ।।

तुम बहुत याद आते हो...

मेरी खामोशियों की सरगोशियों में
जब सन्नाटा ज्यादा पसर जाता है
अपनी धड़कने भी शोर सा मचाती है
बेचैनियां दिल से जिस्म तक पहुँच जाती है
तब तुम बहुत याद आते हो.....

बे वजह खिड़की खोल कर बैठ जाती हूँ
असफल प्रयास करती हूँ तुम्हे भूलाने का
चांद कई बार पास आ कर मुस्कुराता है
पर जब वो चांदनी के सँग बैठ इतराता है
तब तुम बहुत याद आते हो.....

तब धीरे से मेरी सखी निंदिया आकर
होले से पलकों को मूंद उसमे समाती है
और ख़्वाबो की दुनिया में छोड़ जाती है
जब तुम्हारी स्मृतियां लबों पर मुस्कुराती है
तब तुम बहुत याद आते हो.....

तुम्हारे पदचिन्हों का पीछा करते करते
पहुँच जाती हूँ तुम्हारे पास रूहानी दुनियां में
हमारी खनकती हँसी बिखर जाती फिजाओं में
जब सहर आ कर उस ख़्वाब को तोड़ जाती है
तब तुम बहुत याद आते हो.....

"सृजन की समीक्षा"

1.

साप्ताहिक कवि विशेषांक में आपका हार्दिक स्वागत है आदरणीय वंदना शर्मा जी.....

आपको और अंतरा परिवार को सादर वंदन

आपका बहुआयामी व्यक्ति त्व वाकई लाजवाब है | आपकी लेखनी भी सशक्त और लाजवाब है |

धरती की करूण पुकार से आपकी चेतना , आपकी सोच , आपकी चिन्ता और मानवता के प्रति अगाध श्रद्धा दृष्टि गत होती है | धरती का मानवीकरण अंलकार में करूण रूदन आपकी लेखनी को और अधिक श्रेष्ठ बनाता है |

ओ मेरे मन के माध्यम से अंत:करण की व्यथा का उपालंभ स्वर में बखूबी वर्णन कि या है आपने..... मन से एकाकार का भाव वेदना की पराकाष्ठा कर इंगि त करता है |

रूहानी एहसास....गज़ल के माध्यम से आपने प्रेम की सहजता ,सरलता और प्रगाढ़ता को बेहतरीन शब्द-संयोजन के साथ पाठकों से रूबरू करवाया है .....**बहुत खूब**

गीत के माध्यम से द्वि -अर्थी भावों को लेकर आपने परापर **(पर भी, अपर भी)** संबधों को प्रेमिल एहसास से अभिव्यक्त किया है.....जहाँ पर व्यक्ति गत रूप में बोध होता है तो अपर अलौकिकता का उद्योतक है | आपकी रहस्यात्मक अभिव्यक्ति श्रेष्ठ है |

पाँचवीं गजल वि रह के बाद की अभि लाषा और इंतजार को इंगि त करती उत्तम रचना है |

छठी रचना में आत्मचिन्तन के साथ त्याग की भावना और अपनों के लिए ग़मी को खुशी में बदलने की भावाभिव्यक्ति श्रेष्ठ है |

सातवीं रचना में इंतजार की हदों को पार करती आशा और और वेदना की

बेड़ी को तोड़ता विश्वास दोनों को आपने एकसाथ लाकर काव्य सृजना में नवाचार ला दिया है.....

कुलमिलाकर आपकी रचनाऐं बेहद खूबसूरत और सशक्त हैं |

मिलन की आतुरता काबिल-ए-तारीफ है |!!!!!

हार्दिक **बधाई** और शुभकामनाऐं!!!

---डॉ०प्रदीप कुमार "दीप"--

खेतड़ी ,राजस्थान

2.

आप की जितनी भी रचनाएँ पढ़ पाया हूँ उसमे मानव मन की संवेदनाओ के करीब पाता हूँ, ...हम जैसे लोग जो भावो से भरे होते है मगर उचित शब्दो के अभाव मे उदगार नही कर सकते .....जो कि आपकी रचना से हमे मुखरित होने का व जज्बात को जुबान मिल जाती है....**बहुत कम लोग है जो वर्तमान परिवेश मे मानव मन को छूकर गुजरते है.**....हम प्रभु से प्रार्थना करते है कि आप की लेखनी हमेशा चलती रहे व हमे सम्बल देती रहे.....राधे राधे!

आर डी अमरुते

3.

वाह....वाह.....वाह

वंदना जी.....

बहुत खुश होता है मन जब कहीं कोई अनुमोदित करता है...लगता है....साधना... दशा दिशा की ओर अग्रसर है.....ऐसा ही महसूस कर रहीं हैं न....आप....वाह

आपको हार्दिक **बधाई**.।.

रमेश रमन

4.

वंदना जी को मेरा वंदन

मुझे कितनी सुखद अनुभूति हो रही है कि मैं

शब्दों में कैसे बयां करूँ .....

आप ऐसे पुत्र की पिता की पुत्री हैं जिनका गाया गीत

'सूरज की गर्मी से तपते हुए तन को' मेरा पसंदीदा गीत है। आदरणीय रामानंद जी की पौत्री व लोकप्रिय ख्यात संगीतकार की पुत्री वंदना जी को मेरा सादर वंदन

मैं अपने आप को सौभाग्यशालिनी समझ रही हूँ कि ऐसी महान हस्ती की काव्य कला को पढ़ने व उनके दर्शन करने का (साक्षात न सही) पटल पर मौका मिला।

वंदना जी की सभी रचनायें एक से एक लाजवाब हैं।

जैसे:--1- धरती की पुकार में....

आज धरा का जिस प्रकार दोहन हो रहा है उसकी हृदयविदारक पीड़ा को आपने कितने मार्मिक शब्दों में उकेरा है। जो वंदना जी के प्रकृति प्रेम को उजागर कर रहा है।

2--ओ मेरे मन-----

कमाल की भावाभिव्यक्ति

कोई नहीं पूरी कर पाया इच्छाओं के फहरिस्तें

3-ग़ज़ल

रुहानी अहसास ने वाकई रूहानी एहसासों का एहसास करा दिया।

4-गीत (पांव छू लेने की तर्ज पर)

सुर्ख आंखों में थमे अश्क रोके न रुके

बाद मुद्दत के खुशी में भी रुलाया उसने

क्या खूबसूरत अशआर

5...तेरे आने की आहट सुनने को बोझिल पलकों ने नींद टाली है

लगता है प्रिय कहीं दूर है जिसके इंतजार में गज़ल रच डाली है

6.....अपनों के लिए खुद को परिमार्जित कर लेना
वाह सुंदर भावना।

7- तब तुम बहुत याद आते हो

रूहानी दुनिया में पहुँचकर
ख्वाबों की दुनिया में खोकर
किसी की स्मृतियों को याद करके मुस्कुराना
और सहर का आकर उस ख्वाब को तोड़ जाना वाह वाह!!

3, 5 व 7 में लगता है कि प्रिय कहीं दूर है।

वंदना जी!
वाकई आपका वंदन करने को जी चाह रहा है। कल घर में नहीं थी।इस सौभाग्य से वंचित रह गई
जिसका मुझे अफसोस है।
किन्तु अब पढ़कर संतोष है।
गीत गज़ल गायकी सभी में महारत हासिल
आपका अभिनन्द
आपकी लेखनी को वंदन,...

राधा गोयल

5.

शुभ प्रभात मित्रों, सादर अभिवादन आदरणीया वंदना शर्मा जी!!
अंतरा शब्द शक्ति व्हाट्स ऐप परिवार में आपका स्वागत है, सप्ताह के कवि के रूप में प्रस्तुत होने पर बहुत बहुत **बधाई** आपको। यह दिन किसी भी रचनाकार के लिए उत्सव के समान होता है। परिवार का सौभाग्य है

कि आपका सानिध्य मिला। आपका परिचय, शिक्षा, व्यवसाय आपके शानदार व्यक्तित्व की पहचान करा रहा है। आप पर मां सरस्वती की कृपा पहले से ही है क्योंकि आपका जन्म ही ऐसे परिवेश में हुआ जहां संगीत की साधना होती है।

आपकी पहली रचना **धरती की पुकार ,** बहुत मार्मिक चित्रण है जो मूक धरती के दुःख भरे शब्द हैं और कवि के अंदर की आवाज और आश्वासन है और आग्रह है धरती मां से कि तुम अपने विशाल हृदय से ममता लुटाओ और प्रेम बरसाओ।

दूसरी रचना **ओ मेरे मन** बहुत ही सुन्दर रचना है, और स्वयं के मन से ही वार्तालाप है,

आपकी तीसरी रचना **रूहानी अहसास** , बेहद उम्दा ग़ज़ल है

चौथी रचना एक गीत है **बहुत खूबसूरत अभिव्यक्ति** है

पांचवीं रचना ग़ज़ल है, बहुत खूब वंदना जी

छठी रचना अपने अपनों के लिए, उनकी खुशी के लिए **स्वयं को परिमार्जित करना और स्वयं की सारी इच्छाएं उनकी खुशी के आगे छोटी मान लेना किसी बहुत नेक इंसान का ही दिल कर सकता है** ऐसा, बहुत सुंदर अभिव्यक्ति,

सातवीं रचना किसी की याद में जागना, मुस्कुराना फिर याद करते हुए सो जाना और फिर ख्वाबों में मुलाकात होना , बेहतरीन सृजन है , अद्भुत अहसास दिलाती है ये रचना,...

आपके अच्छे स्वास्थ्य और उज्जवल भविष्य की कामना करती हूं।

मंगलकामनाएं

पिंकी परुथी "अनामिका"

6.

हार्दिक शुभकामनाऐं आपको

आपका लेखन बहुत ही सुलझा हुआ और सार्थक प्रवृति में सुसज्जित है !

रचनाओ में सुस्पष्ट हिन्दी वर्तनी का प्रयोग मनमोहक है ।

परिचय - आपके परिचय में पारीवारिक संस्कार सम्मिलित हैं !
सबसे अच्छी बात तो यह है आपकी परवरिश के तौर पर ही साहित्य की ओर किया गया ! जिससे कि आपकी रुचि साहित्यिक जीवन की ओर दिशा कर गई !

रचना -

आपकी रचनाओ में सामाजिक वेदना . प्रकृति की चहल - पहल का जिक्र, और पारीवारिक परिवेश एवम् प्रेम अनुभूति का अच्छा खासा चित्रण हुआ है !

आप के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आपको रविवारिय कवि विशेषांक में चुनने हेतु **हार्दिक बधाई !!**

आप हमेशा प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे !

लकी शर्मा मथुरा

7.

सूरज की गरमी से जलते हुए तन को मिलती है तरुवर की छाया,

ऐसा ही एक गुण अभिव्यक्ति का है जो आपने विरासत में पाया,

क्या देगा हमको, हमसे क्या ले लेगा या किस रुप में आकर मिलेगा?

कब क्या कैसे का रहस्य कौन समझा,किसने जानी है ईश्वर की माया?

प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com